इकाई : तीन

दिलों का मिलन

हमारा भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आज आप क्या कर रहे हैं।

-महात्मा गांधी

» **पहचानकर लिखें, ये किन-किनके बारे में हैं :**

- मिशनरीज़ ऑफ़ चैरिटी की स्थापना की, जो दुनिया भर में अंधे, वृद्ध और विकलांग लोगों की सेवा करती है।
- 1979 में नोबेल शांति पुरस्कार और 1980 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

? → ______

- 'नर्मदा बचाओ' आंदोलन की संस्थापक सदस्य।
- साल 2000 में टाइम पत्रिका ने 20वीं सदी के 100 नायकों में शामिल किया।

? → ______

- अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों पर आधारित आज़ादी की लड़ाई का नेतृत्व किया।
- विदेशी-बहिष्कार और स्वदेशी-प्रचार का प्रोत्साहन किया।

? → ______

- कुष्ठ रोगियों के उपचार, पुनर्वास और सशक्तीकरण के लिए आनंदवन की स्थापना की।
- पूरे जीवन में कुष्ठ रोगियों, आदिवासियों और मजदूर-किसानों के साथ काम करते रहे।

? → ______

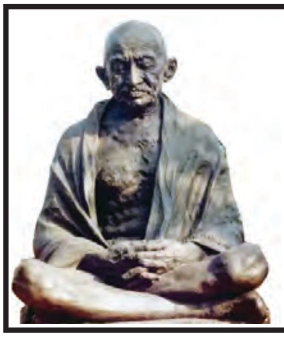

1

संस्मरण

दिल्ली में उनींदे

गगन गिल

रोज़ जैसा दिन है। फरवरी की शाम। हवा में ठंडक है। मैं अभी-अभी 'स्वाति' से साहित्य अकादमी के कुछ प्रकाशन खरीदकर इस सड़क पर पहुँची हूँ। मंदिर मार्ग पर सड़क सुनसान है। बिरला मंदिर के बाहर दो-एक ऑटो खड़े हैं।

एक से मैं पूछती हूँ– "चलना है?" "बैठिए" –वह कहता है। मैं गिरती-पड़ती अपनी किताबें सीट पर जमाती हूँ।

उसे चलने में अभी देर है। उसके शरीर की हरकत में एक अजीब-सी थकान है। वह अपनी सीट के नीचे से निकालकर एक गंदा, उधड़ा, आधी बाँह का भूरा स्वेटर पहन रहा है। धीरे-धीरे। अभी मेरा ध्यान उसके चेहरे की तरफ़ नहीं गया। उसे मैं बाद में देखूँगी। ऑटो के ड्राइविंग आईने में, जिसमें उसकी आँखें और भी धँसी दिखेंगी और चेहरे की हड्डियाँ और भी उभरीं। उसके चेहरे पर भूख और बीमारी के अलावा एक और चीज़ भी दिखेगी। अभी मुझे उसका नाम नहीं मालूम। आने वाले दिनों में मैं उसके लिए बिलकुल सटीक शब्द ढूँढ़ पाऊँगी। लेकिन अभी नहीं। यह बाद में होगा।

वह चलता है। ऑटो चलते ही उसकी खाँसी शुरू हो जाती है। मालूम नहीं, उसे ठंड लग रही है या हम ट्रैफ़िक की दमघोंटू के बीचों-बीच आ गए हैं। हमने दो मोड़ पार

कर लिए हैं, लेकिन न उसकी खाँसी रुकती है, न उसका ऑटो। इसके बाद ही मैं उसका चेहरा देखती हूँ। ड्राइविंग आईने में।

"यह खाँसी कब से है?" मैं पीछे बैठी पूछती हूँ। "होगी कोई दस-बारह साल से।"

"किसी डॉक्टर को नहीं दिखाया?"

"पैसा भी तो चाहिए, उसके लिए !"

हमारी बातचीत टूट जाती है। सड़क के दोनों ओर ट्रैफ़िक जा रहा है। सारी दुनिया कार्य-व्यापार में लगी है। रुपए का सिक्का सबको दौड़ा रहा है। किसीके हिस्से में कम, किसीके हिस्से में ज़्यादा... उसका दम फिर फूल रहा है।

» 'रुपए का सिक्का सबको दौड़ा रहा है, किसीके हिस्से में कम, किसीके हिस्से में ज़्यादा' –इससे आपने क्या समझा?

"आप दिल्ली कब आए थे?"

"1979 में।"

"घर कहाँ है आपका?"

"यही है।" वह मुझे ऑटो के आईने में से देखता है। ज्यों घर आए मेहमान को देख रहा हो।

"आपका मतलब है, आप तब से सड़क पर ही हैं?"

"हाँ।"

यानी उसे बिना सोए चौदह साल बीत गए ! मैं यह तो बता सकती हूँ, कि वह गरीब है, कि उसके पास पूरे कपड़े नहीं हैं, कि वह किसी भी ऐसे व्यक्ति जैसा लगता है जो फ़ाके का अभ्यस्त हो। लेकिन बेघर? बेघर तो वह कहीं से नहीं लगता।

"आपका मतलब, आप इस तीन फीट लंबी पिछली सीट पर सोते हैं?"

"हाँ ।"

"और आपकी चीज़ें ?"

"उनपर आप बैठी हैं..."

वह बताता है कि जिस सीट पर मैं बैठी हूँ, उसके नीचे उसका बक्सा है, जिसमें एक कम्बल है, एक जोड़ी कपड़े हैं और एक कटोरा है। कटोरा पानी पीने के काम भी आता है और खाना रखने के भी।

"आप खाना कहाँ खाते हैं ?"

"किसी भी ढाबे में।"

"और बाथरूम के लिए ?"

"पब्लिक शौचालय है। नहा मैं कहीं भी लेता हूँ । सड़क के किनारे किसी भी नल पर। अकसर पंचकुइयाँ रोड पर नहाता हूँ । इतवार के दिन। वह जगह ठीक है। वहाँ मेरे जैसे कई लोग आते हैं..."

मेरा घर आ गया है। उसका मीटर देखती हूँ, तो शक होता है, कि रास्ते में कहीं अटक तो नहीं गया था। उससे पूछती हूँ, "आपका मीटर ठीक तो है न?"

वह कहता है, "जी, बिलकुल ठीक। पिछले छह साल से एक पैसे का फ़र्क नहीं ।"

उतरते-उतरते उससे पूछती हूँ, "सुनिए, क्या हम कल किसी समय मिल सकते हैं?"

"क्यों?" वह जानना चाहता है।

"मैं आपके बारे में सब जानना चाहती हूँ।"

"उससे कुछ होगा?"

"क्या?"

"क्या? उसके बाद सरकार मेरे लिए कुछ करेगी?"

» 'क्या उसके बाद सरकार मेरे लिए कुछ करेगी?' –जनता सरकार से क्या-क्या उम्मीदें रखती है?

"यह तो कह नहीं सकती। लेकिन अगर आप बात करने के लिए हाँ करें, तो कम-से-कम आम लोगों को आपके जीवन के बारे में पता चलेगा ।"

"और आपको क्या मिलेगा ?"

"मैं अपना काम कर रही होऊँगी। मैं रेडियो के लिए प्रोग्राम बना रही हूँ..."

"ठीक है। मैं सब समझ रहा हूँ। आपके पास भी कोई ताकत नहीं है। आप भी मेरे जैसी हैं। मैं रोड पर सवारी ढूँढ़ता हूँ, और आप कहानी... अगर मेरी कहानी सुनने से आपका काम होता है तो मैं आ जाऊँगा।"

> 'अगर मेरी कहानी सुनने से आपका काम होता है तो मैं आ जाऊँगा।' –यहाँ रिक्षा चालक का कौन-सा मनोभाव प्रकट होता है?

"कितने बजे ?"

"सुबह दस बजे ?"

"बहुत अच्छा।"

अगले दिन वह आता है। मेरे घर। करीब साढ़े पाँच फीट ऊँची उसकी दुबली काया बड़े कमरे के दरवाज़े पर ही सिकुड़ जाती है। वह सोफ़ा पर नहीं, फर्श पर बैठ जाता है–

"मुझे यहीं बैठा रहने दीजिए। मैं आपका सोफ़ा गंदा नहीं करना चाहता।"

मैं कल की अपनी जान पहचान के नाते उसे दोस्ताना मुसकान देती हूँ। उसके शरीर में, चेहरे पर, हाथ-पाँव में इतनी सारी नीली रगें हैं– मैंने पहले नहीं देखा था। वह बैठता है, तो जैसे सारी भूख-प्यास उसके साथ बैठ जाती है।

"कुछ चाय वगैरह लेंगे ?"

वह कुछ झिझकता, कुछ शर्माता है। सैंडी मेरे हारवर्ड के दिनों का साथी, अपना टेपरिकॉर्डर लगा रहा है। लैटिन अमरीका के देशों के बाद यह पहला

मौका है, जब उसका वास्ता तीसरी दुनिया के देश की गरीबी से पड़ रहा है। हम भारत में अमेरिका के नेशनल पब्लिक रेडियो के लिए 'अन्न और भूख' श्ृंखला के प्रोग्राम बना रहे थे कि मुझे यह ऑटो ड्राइवर टकरा गया। अब हम उसकी नींद के बारे में जानना चाहते हैं। असंभव नींद के बारे में...

नींद को यहाँ असंभव क्यों बताया गया होगा?

मैं चाय बना लाती हूँ ताकि हम शुरुआती अटपटेपन में से निकल सकें।

"नाम क्या है आपका?"

" राजा राम ।"

"घर कहाँ है?"

"उन्नाव, यू.पी. में ।"

"ऑटो चलाना कैसे शुरू किया?"

"पहले आठ साल तक तो रिक्शा चलाता रहा। चाँदनी चौक में। फिर एक बहुत दयालु, अमीर आदमी से मुलाकात हो गई। डेढ़ साल मैंने उसकी सेवा की। उसे रोज़ ले जाता था। कभी एक पैसा नहीं लिया। उसने बदले में मुझे यह पुराना ऑटो ले दिया, जिसे अब चलाता हूँ।"

"उससे पहले क्या करते थे?"

"गाँव में मज़दूरी करता था, खेतों में। घर हमारा बारिशों में ढह गया था। दोबारा मैं उसे बनवा नहीं पाया। भुखमरी थी। एक दिन मैंने तय किया कि दिल्ली चलें..."

"गाँव में कोई ज़मीन नहीं थी?"

"नहीं, हमारे पास कभी ज़मीन नहीं रही, पुश्तों में। मेरा बाप अंधा हो गया था, जब मैं चौदह-पंद्रह बरस का था। और गाँव में मुझे कोई काम नहीं मिलता था। कोई दूसरा चारा नहीं था ।"

"लेकिन दिल्ली ही क्यों आना चाहते थे?"

"गाँव में मैं सिर पर बोझा ढोता था। और एक रात मैंने सोचा, मेरे सिर पर छत तो वैसे भी नहीं है। क्या फ़र्क पड़ता है, कि मैं गाँव के खुले में सोऊँ या दिल्ली की सड़क पर? सो पहले मैं कानपुर गया, फिर वहाँ से दिल्ली ।"

"अब खुश हैं यहाँ पर ?"

"पेट भरने आया था। मुझे खुशी है कि वह भर लेता हूँ। और ऑटो चलाता हूँ। सिर पर बोझ उठाने से तो अच्छा ही है। नहीं?"

मुझे नहीं मालूम, बोझा ढोते हुए यह संसार कैसा दीखता है, सड़क पर सोते हुए कैसा, ऑटो में रहते हुए कैसा। मेरे पास उसके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं ।

"ऑटो चलाते हुए कैसा लगता है?"

"ऑटो बड़ी मुश्किल सवारी है। सारा वक्त खड़-खड़ करती है। जवान ड्राइवरों के लिए तो ठीक है, मेरे जैसों के लिए नहीं। आपको पता है, ऑटो चलाते हुए कोई मर भी सकता है? और फिर सब तरफ़ से धुआँ। मुझे तो तब अच्छा लगता है, जब कोई ग्राहक किसी खुली तरफ़ जा रहा हो... "

"आपकी यह खाँसी... क्या धुएँ के कारण ?"

"पता नहीं, किस कारण। शायद भगवान की सज़ा हो! मैं तो बस यही जानता हूँ कि मैं जब धुएँ में साँस लेता हूँ, तो मेरा भीतर तक सिकुड़ जाता है।"

"उम्र क्या होगी आपकी?"

"क्या पता! शायद पचास साल । बस इतना याद है, कि सन् '62 में मैं पाँचवीं में पढ़ता था। और स्कूल जाना मैंने 8 साल की उम्र से शुरू किया था..."

मैं हिसाब लगाती हूँ। मेरे हिसाब से उसे चालीस के ऊपर नहीं होना चाहिए। तब क्या उसकी थकान के सब साल उसमें जुड़ गए हैं?

> 'तब क्या उसकी थकान के सब साल उसमें जुड़ गए हैं?' – लेखिका ने ऐसा क्यों सोचा होगा?

"आपके लिए एक अच्छा दिन क्या होता है?"

अच्छा दिन कहते ही मेरे मुँह में पानी भर आता है। वर्षा में धुले हरे पत्ते, भीगी-भीगी हवा, अधगीली सड़कें– सब आँखों के सामने घूम जाते हैं।

"मुझे नहीं मालूम, अच्छा दिन क्या होता है। दो वक्त की रोटी मिल जाए गनीमत है।"

> 'दो वक्त की रोटी मिल जाए गनीमत है।' –इस कथन पर आपका विचार क्या है?

यह मेरा पहला पाठ है। हम एक ही शहर में रहते हुए दो अलग-अलग मौसमों में रहते हैं । अन्न और भूख के मौसम में । घर और बेघरी के मौसम में ।

> 'हम एक ही शहर में रहते हुए दो अलग मौसमों में रहते हैं। अन्न और भूख के मौसम में। घर और बेघरी के मौसम में।' –इस कथन पर आपका विचार क्या है?

गतिविधियाँ

» **किसने किससे कहा ?**

- आपका मतलब आप तब से सड़क पर ही हैं ।
- मैं आपका सोफ़ा गंदा नहीं करना चाहता हूँ ।
- आम लोगों को आपके जीवन के बारे में पता चलेगा ।
- आपके लिए एक अच्छा दिन क्या होता है?
- दो वक्त की रोटी मिल जाए गनीमत है ।
- आपके पास भी कोई ताकत नहीं है, आप भी मेरे जैसी हैं ।

» **हर वाक्य किससे संबंधित है?**

वाक्य	व्यक्ति
राजा राम को पुराना ऑटो ले दिया।	• राजा राम • सैंडी • दयालु, अमीर आदमी • लेखिका
रेडियो के लिए प्रोग्राम बना रही है।	
पहले गाँव के खेतों में मज़दूरी करता था।	
हार्वर्ड के दिनों में लेखिका का साथी रहा।	
बचपन से ही बाप अंधा हो गया।	
साक्षात्कार की रिकॉर्डिंग कर रहा है।	
चांदनी चौक में रिक्शा चलाता है।	

» **वाक्यों को सही क्रम से लिखें :**

- गाँव में सिर पर बोझा ढोता रहा ।
- बारिश में उसका घर ढह गया ।
- आठ साल तक साइकिल रिक्शा चलाता रहा ।
- दिल्ली जाने का निश्चय किया ।
- अपने गाँव से कानपुर गया ।
- ऑटो को ही अपना घर बनाया ।
- डेढ़ साल तक मुफ़्त में सेवा करता रहा ।

» **पढ़ें, पहचानें :**

- मैंने इससे पहले किसी **बेघर** के बारे में नहीं सोचा था।
- एक **बेफ़िक्र** नींद का न मिलना किसीकी आत्मा में कहाँ सुराख कर सकता है।

रेखांकित शब्दों की विशेषताओं पर चर्चा करें, नीचे की तालिका भरें।

संज्ञा	'बे' उपसर्ग वाले शब्द	अर्थ
घर	बेघर	जिसका कोई घर न हो।
फ़िक्र	....	जिसकी कोई फ़िक्र न हो।
काम	बेकाम	....
....	बेनाम	जिसका कोई नाम न हो।
होश	....	जिसका कोई होश न हो।
....	बेशर्म	जिसकी कोई शर्म न हो।
....	बेहिसाब	....

» **पहचानें, लिखें :**

सरकार मेरे लिए कुछ **करेगी।**

मैं आ **जाऊँगा।**

- रेखांकित शब्दों के प्रयोग की विशेषताओं पर चर्चा करें। ऐसे वाक्य पाठ से छाँटकर लिखें।

» **ज़रा ध्यान दें :**

- उसकी खाँसी नहीं रुकती है।
- उसका ऑटो नहीं रुकता है।

न *उसकी खाँसी रुकती है* **न** *उसका ऑटो।*

» नीचे दिए गए सरल वाक्यों को नमूने के अनुसार बदलकर लिखें :

- अमन को तमिल नहीं आती है। अमन को तेलुगु नहीं आती है।
- दीदी चाय नहीं पीती है। दीदी शर्बत नहीं पीती है।
- नानी को सिनेमा पसंद नहीं। नानी को नाटक पसंद नहीं।

» **क्रियापदों की विशेषता समझें :**

- मैंने **तय किया** कि दिल्ली चलें।
- लोगों को आपके जीवन के बारे में **पता चलेगा**।

» रेखांकित प्रयोगों पर ध्यान दें। ऐसे कुछ विशेष प्रयोग पाठ से चुन लें और अपने वाक्य में प्रयोग करें।

» **रोल-प्ले चलाएँ :**

- पठित संस्मरण की किसी घटना के आधार पर रोल-प्ले चलाएँ।

» **दोस्तों से चर्चा करें :**

- राजा राम जैसे लोगों की समस्याओं के क्या-क्या कारण होंगे?
- राजा राम जैसे लोगों की सामाजिक प्रगति के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

» **'बेघरों की समस्या' विषय पर लघु लेख लिखें।**

अनुबद्ध्ध कार्य

- संस्मरण का ऑडियो बुक तैयार करें।
- मान लें, आप राजा राम का साक्षात्कार लेने जा रहे हैं, तो उससे पूछने के लिए प्रश्नावली तैयार करें।

गगन गिल

जन्म : 19 नवंबर 1959

गगन गिल का जन्म नई दिल्ली में हुआ। 'एक दिन लौटेगी लड़की' 'अंधेरे में बुद्ध', 'मैं जब तक आई बाहर', 'दिल्ली में उनींदे', 'अवाक्' आदि प्रमुख कृतियाँ हैं। वे भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार से सम्मानित हैं।

मदद लें :

उनींदे - ഉറക്കമില്ലാത്ത, sleepless, தூக்கமில்லாத, ನಿದ್ದೆಯಿಲ್ಲದ

सुनसान - निर्जन

गिरती-पड़ती - बड़ी कठिनाई से

जमाना - इकट्ठा करना

देर - समय

हरकत - चेष्टा

अजीब-सी - विचित्र सी

थकान - थकावट

गंदा - मैला

उधड़ा - फटा हुआ

आधी बाँह - മുറിക്കൈ, half sleeve, அரைக் கைச்சட்டை, ಅರ್ಧತೋಳು

भूरा - തവിട്ടുനിറത്തിലുള്ള, Brown, தவிட்டு நிறம், ಕಂದು

धँसी - കുഴിഞ്ഞ, sunken, குழிந்த ಗುಳಿಗಳಿಗೆ ಹೋದ

हड्डी - अस्थि

उभरना - प्रकट होना

बिलकुल - പൂർണമായും, absolutely, முற்றிலும், ನಿಜವಾಗಿಯೂ,

सटीक - उचित

ढूँढ़ना - खोजना

खाँसी - ചുമ, cough, இருமல், ಕೆಮ್ಮು

ट्राफ़िक की दमघोंटू - ഗതാഗതക്കുരുക്ക്, traffic jam, போக்குவரத்து நெரிசல், ಸಂಚಾರಸ್ತಂಭನ

मोड़ - വളവ്, a curve, வளைவுகளைக் கடந்து சென்றது, ವೃತ್ತವನ್ನು ದಾಟಿ ಹೋಗುವುದು

टूट जाना - खंडित होना

दम फूलना - साँस चढ़ना, ശ്വാസം മുട്ടുക, to be out of breath, மூச்சுத்திணறல், ಉಸಿರು ಗಟ್ಟುವುದು

ज्यों - जैसे ही

मेहमान - अतिथि

बेघर - बिना घर का വീടില്ലാത്ത, homeless, வீடில்லாத , ಮನೆ ಇಲ್ಲದ

वास्ता पड़ना - व्यवहार का अवसर आना

बेफ़िक्र - निश्चिंत

सुराख - छेद

समस्या - പ്രശ്നം, Problem, பிரச்சினை, ಸಮಸ್ಯೆ

यानी - अर्थात

फ़ाका - പട്ടിണി, starvation, பட்டினி, ಉಪವಾಸ,

कटोरा - കിണ്ണം, bowl, கோப்பை, ಗಿಣ್ಣಾಲು

ढाबा - छोटा सा भोजनालय

नल - tap

अकसर - प्रायः

शक - शंका

अटकना - रुकना

फ़र्क - अंतर

नागरिक - പൗരൻ, citizen, குடிமகன், ನಾಗರಿಕ

आम लोग - जनसाधारण

पता चलना - मालूम होना

हकदार - അവകാശി, entitled person, உரிமையாளர், ಅರ್ಹತೆಇರುವ,

ताकत - शक्ति

दुबली - മെലിഞ്ഞ, thin, மெலிந்த, ಸಪೂರವಾದ

काया - शरीर

सिकुड़ जाना - संकुचित होना

फ़र्श - തറ, floor, தரை, ನೆಲ

जान पहचान के नाते - പരിചയത്തിന്റെ പേരിൽ, as an acquaintance, ಪರಿಚಯವಿದೆಎಂಬ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ தெரியும் என்ற நிலையில்

दोस्ताना मुस्कान - दोस्तों-सी मुस्कराहट

रग - नस

वगैरह - आदि

झिझकना - हिचकना

शर्माना - लज्जित होना

मौका - अवसर

वास्ता - संबंध

टकरा जाना - मिलना

शुरुआती - आरंभ के

अटपटापन - അസ്വസ്ഥത, awkwardness அருவருப்பு, ಎಡವಟ್ಟು

मुलाकात - भेंट

मज़दूरी - श्रम

ढहना - ध्वस्त होना, തകരുക, to get destroyed, இடிந்து விழுந்தது, ನಾಶವಾಗು,

दोबारा - फिर

भुखमरी - भूखों मरने की स्थिति

तय करना - निश्चय करना

पुश्तों में - परंपरा से

चारा - विकल्प, choice

बोझा ढोना - भार ले जाना

छत - മേൽക്കൂര, roof, ಛಾವಣಿ, மேற்கூரை

खुले में सोना - തുറസ്സായ സ്ഥലത്ത് ഉറങ്ങുക, to sleep in an open space, திறந்த வெளியில் உறங்குதல், ತೆರೆದ ಸ್ಥಳದಲ್ಲಿ ನಿದ್ದೆಮಾಡು

सो - इसलिए

ग्राहक - ഉപഭോക്താവ്, customer, வாடிக்கையாளர், ಗ್ರಾಹಕರು

सज़ा - दंड

धुलना - गीला होना

अधगीला - आधा भीगा हुआ

ग़नीमत - खुशी की बात